MT EDUCARE LTD.

ICSE X **SUBJECT : HINDI**

BOARD PAPER – 2016

ANSWERSHEET

(खण्ड'क')

A.1

1) **''पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित युवा वर्ग की मानसिकता'**

पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से फैशन और प्रदर्शन की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है । इस कथन में लेशमात्र भी मिथ्या नहीं है । पाश्चात्य सभ्यता इतनी प्रभावशाली हो गई है कि लोगों की विवेकबुद्धि कुंठित हो गई है। क्या सही है, क्या गलत है, यह सोचना ही बन्द कर दिया है। कभी-कभी तो यह फैशन इतना हास्यपद प्रतीत होता है कि लोगों की बुद्धि पर दया आती है। फैशन में भी तो एक सन्तुलन होना चाहिए । फैशन के नाम पर भारतीय संस्कृति को तिलांजलि देकर पाश्चात्य संस्कृति को अपनाना अपनी ही जड़ों पर कुठाराघात किया जाने के समान है । नवीनता लाना या परिवर्तन लाना बुरी बात नहीं है लेकिन उसमें शालीनता तो हानी चाहिए । फैशन के नाम पर नग्नता, अश्लीलता, मर्यादाहीनता आदि, सराहनीय नहीं है । इससे समाज में विकृति उत्पन्न होती है । ऐसा प्रतीत हाता है कि पश्चिमी देशों की नकल करके हम लोग फूहड़ और लज्जाहीन हो गये हैं । पाश्चात्य संस्कृति को आत्मसात करके हम अपने रीति-रिवाजों और श्रेष्ठ परम्पराओं को नष्ट करते जा रहे हैं । फलस्वरूप समाज में अपराध, अशिष्टता, अश्लीलता, पारिवारिक विघटन उत्पन्न हो रहे हैं । आज लोगों को वेलेन्टाइन डे, अप्रैल फूल, रोज डे, मदर्स डे, फादर्स डे आदि तो याद रहते हैं । परन्तु माता-पिता गुरू आदि के प्रति आदर भाव याद नहीं रहता है । पाश्चात्य सभ्यता का ही परिणाम है कि शादी के बाद बहुत शीघ्र सम्बन्ध विच्छेद हो जाते हैं ।

हमारे पूर्वजों ने एक लम्बे और गहन अध्ययन के बाद मनुष्य के लिए एक सभ्य समाज की संरचना हेतु हर क्षेत्र में कुछ आदर्श, कुछ मूल्य, कुछ सीमाएँ निर्धारित की थी जिनके अनुपालन से भारतीय संस्कृति विश्व में पूजनीय बनी परन्तु आज उन्हीं आदर्शों की अवहेलना से हमारे नैतिक मूल्यों का निरन्तर पतन हो रहा है । यह पाश्चातय संस्कृति का ही प्रभाव है कि पति-पत्नी के सम्बन्धों के बीच तीसरे की उपस्थिति न्ययोचित ठहराई जा रही है । शर्म की बात तो यह है कि भारतीय नारी जिसकी सुन्दरता तथा श्रृंगार उसकी लज्जा हुआ करती थी आज वह पूर्णतया लज्जारहित हो गयी है। युवक–युवतियों पर माता-पिता का कोई अंकुश नहीं रहा । 'गर्लफ्रैंड', 'बॉय फ्रैंड' पाश्चात्य आधुनिक फैशन है । देर रात तक घर से बाहर रहना, क्लब में पार्टी, ड्रिंक व डांस करना यह सब पाश्चात्य संस्कृति का ही प्रभाव है । 'प्रेम विवाह' इसी संस्कृति की देन है । पाश्चात्य सभ्यता ने माँ को 'मौम' व पिता को 'डैड' कर दिया है । गुरू-शिष्य तथा भाई-बहन आदि के अतिरिक्त समाज के अहम व महत्वपूर्ण सम्बन्ध भी इतने दूषित हो गये हैं जिन्हें सुनकर लोग शर्मसार हो जाते हैं । **[15]**

2) **''सादा जीवन उच्च विचार''**

'सादा जीवन उच्च विचार' बड़ी सारगर्भित उक्ति है । यद्यपि आज के आकर्षण युक्त परिवेश में इस उक्ति का महत्व न हो परन्तु युगों-युगों से यह कथन महत्वपूर्ण रहा है क्योंकि अनेक महापुरुषों ने इसके महत्व को द्विगुणित किया है । कौन नहीं जानता महान विभूति लाल बहादुर शास्त्री को, जो गुदड़ी के लाल कहे जाते थे । वह सादगी में पले बढ़े तथा जीवन में संघर्षो से निरन्तर लड़ते रहे । प्रतिदिन नदी पार करके पाठशाला जाना और उसी तरह वापस लौटना । उन्होंने अपनी सच्चाई, ईमानदारी व परिश्रम के बल पर हर कठिनाई को सहज बनाया तथा सदैव जीवन में स्वावलम्बी बने रहे । जीवन कदाचित् सादा था परन्तु विचारों में अप्रत्याशित उच्चता थी । अपने इन्हीं गुणों के फलस्वरूप जनता ने उन्हें भारत के प्रधानमन्त्री पद पर आसीन कर दिया ।

ऐसी ही एक महान विभूति ईश्वरचन्द विद्यासागर जो सादगी की प्रतिमूर्ति थे । एक महान आयोजन में मुख्य अतिथि के सम्मान हेतु आमन्त्रित थे । मार्ग में उन्होंने देखा एक भारी 'बीम' को कुछ अशक्त लोग उठाने के प्रयास कर रहे थे परन्तु भारी होने के कारण नहीं उठा पा रहे थे । वहीं उनका स्वामी जो सहारा देकर उठवा सकता था किन्तु अपने बड़प्पन के कारण 'उठाओ', 'धक्का दो' आदि शब्द तो कह रहा था परन्तु उनकी सहायता नहीं कर रहा था । ईश्वरचन्द विद्यासागर ने जब देखा तो आगे बढ़कर जैसे ही हाथ से जोर लगाया काम हो गया। आयोजन में वह व्यक्ति जो आदेश दे रहा था, उसने उन्हें मुख्य अतिथि के रूप में देखा तो शर्म से पानी-पानी हो गया । इसी तरह सादगी अपनी अमिट छाप छोड़ जाती है ।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सन् 1950 में स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने । उनके आवास की व्यवस्था 'तत्कालीन' वायसराय भवन में की गई । वहाँ उन्हें बहुत से कमरे दिखाये गये । उन्होंने स्पष्ट कहा उन्हें अधिक कमरों की आवश्यकता नहीं । वह अपनी आवश्यकतानुसार ही कमरों में रहेंगे । अधिकारी उन्हें शयन कक्ष में ले गये । वहाँ का स्प्रिंगदार कीमती शाही पलंग देखकर उन्होंने उसे हटाने को कहा । अधिकारियों के यह कहे जाने पर कि आपका पद गरिमावाला है और वायसराय के समकक्ष है । अत: पद के अनुरूप आपको इसका उपयोग करना चाहिए। तब उन्होंने उत्तर दिया वह वायसराय के अनुरूप नहीं हैं । शाही पलंग उनके लिए काँटो की सेज होगी । उन्होंने कहा ''मेरे रहन-सहन के कुछ आचार-विचार हैं, मैं उनके विरुद्ध नहीं जा सकती अन्यथा मेरे आदर्शों को आघात पहुँचेगा ।'' भारत एक कृषि प्रधान देश है । यहाँ का किसान परिश्रमी तो है परन्तु उसकी अवस्था बड़ी दीन-हीन है । ऐसे देशवासियों का प्रतिनिधि ऐशी-आराम की जिन्दगी कैसे बिता सकता है ?

उनके इन शब्दों को सुनकर अधिकारी अचम्भित हुए बिना न रह सके । उन्होंने समझ लिया कि यह सच्चे जनसेवक सादगी-पसन्द तथा सिद्धान्तवादी महापुरुष हैं । उनके हृदय में अपने नेता के प्रति हार्दिक श्रद्धा की भावना का प्रादुर्भाव हुआ । **[15]**

3) **''योग साधना का महत्व''**

हमारे जीवन में योग का महत्वपूर्ण स्थान है । यह अक्षरश: सत्य है कि योग के माध्यम से हम अपने मन व शरीर को पूर्णरूपेण स्वस्थ बना सकते हैं । यदि वास्तव में हम अपने जीवन को सुखी व समृद्ध बनाना चाहते हैं तथा दु:खों से छुटकारा पाना चाहते हैं तो हमें योग का नियमित रूप से पालन करना चाहिए । यूँ तो जीवन में सुख-दु:ख आते रहते हैं लेकिन मन को स्वस्थ रखने के लिए हमे शरीर को चुस्त-दुरुस्त रखना अति आवश्यक है ।

कर्म साधना के लिए शरीर का स्वस्थ होना आवश्यक है लेकिन मन की स्वस्थता ही कर्म करने की प्रेरणा देती है । अत: नियमित योग के माध्यम से ही तन व मन दोनों स्वस्थ रह सकते हैं । नियमित योगासनों को करने से शरीर में शक्ति तो आती ही है साथ ही रूप में लावण्य आता है । खुली हवा में योग करना फेफड़ो मे ऑक्सीजन की वृद्धि । करता है शरीर का अंग-प्रत्यंग क्रियाशील होता है तथा शरीर में लचीलापन आता है । योग के द्वारा अनेक रोगों से भी रक्षा होती है तथा यह रक्त को शुद्ध करता है। हृदय को शुद्ध रक्त प्राप्त होता है । शरीर का आलस्य दूर होता है तथा क्रियाशीलता बढ़ती है ।

योग करने का सबसे श्रेष्ठ समय प्रात:काल होता है । सूर्य नमस्कार करने से भयंकर से भयंकर रोगों से निवृत्ति मिल जाती है । योग करने से खूब भूख लगती है तथा पाचन शक्ति दुरुस्त रहती है । आत्मविश्वास, एकाग्रता एवं मस्तिष्क में बल वृद्धि होती है। शरीर से पसीना निकालता है जिससे शरीर की गन्दगी दूर होती है ।

योग न करने से शरीर आलसी, रोगी व अनमना-सा रहता है । काम करने में मन नहीं लगता। भोजन में आसक्ति नहीं रहती । हमेशा प्रतीत होता है कि जैसे हम बीमार हैं । चिकित्सक के पास जाकर भी सन्तुष्टि नहीं होती। योग बिना पैसे का उपचार है । यह सब योग का ही चमत्कार है कि हमारे ऋषि मुनियों ने योग के बल पर निराहार रहकर तीन-तीन हजार वर्षो तक एक पैर पर खड़े होकर तपस्याएँ कीं । यही कारण है आज भी ऋषि मुनियों ने व्यायाम और योगासन पर बहुत बल दिया है । बाबा रामदेव का योग आज के युग का स्पष्ट उदाहरण

है । उन्होंने योग के माध्यम से लोगों के लाइलाज रोगों को भी दूर किया है । उन्होंने प्राणायाम और योग के अनेक आसन बताये हैं । इन योगासनों का ज्ञान बाबा मौखिक और लिखित रूप में टेलीविजन के आस्था और संस्कार चैनलों पर नियमित देते हैं ।

योग का सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि योगी व्यक्ति को जल्दी बुढ़ापा नहीं आता । उसके शरीर का हर अंग नियमित व्यायाम व योग से क्रियाशील बना रहता है । आज की दुनिया में बी. पी., डायबिटीज, अर्थराइटिस, थायरॉइड जैसे अनेक रोग लगे हुए हैं । परन्तु इसमें सन्देह नहीं है कि जिन्होंने बचपन से योग व व्यायाम को अपनी नियमित दिनचर्या बनाई होगी उसे कोई बीमार छू नहीं सकता

हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी तो व्यायाम व योग के घनिष्ठ समर्थक हैं । उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति के लिए योग की आवश्यकता पर जोर दिया है। इसके महत्व को दर्शाने के लिए उन्होंने ''योग दिवस'' का भी आयोजन किया था । वह स्वयं योग करते हैं । कहने का अभिप्राय यह है कि योग करने वाले की कार्य क्षमता एवं मस्तिष्क क्षमता में अत्याधिक वृद्धि होती है इसलिए मन, बुद्धि एवं शरीर को स्वस्थ रखने के लिए योग करना चाहिए । **[15]**

4) **''मज़हब नही सिखाता आपस में बैर रखना''**

मानव की उस असीम शक्ति में गहरी आस्था रही है और यह शाश्वत सत्य है कि सभी मानव एक ही ईश्वर की सन्तानें हैं । विभिन्न धर्मों से सम्बन्धित होने के कारण सबकी धर्म सम्बन्धित मान्यताएँ अलग-अलग हैं, परन्तु सबका एक ही ध्येय है, उस परमपिता की प्राप्ति और साथ ही श्रेष्ठ कार्यों द्वारा अमन-चैन की प्राप्ति । भक्तिकालीन कवि कबीरदास जी ने कहा है कि ईश्वर एक है, श्रेष्ठ धर्म है मानवता । वे पाखण्डी लोगों पर प्रहार करते हैं कि

''पाथर पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहाड़ ।
ताते ये चाकी भली, पीस खाए संसार ।।''

अर्थात यदि पत्थर को पूजने से भगवान प्राप्त होते हैं, मैं पहाड़ को पूजना पसन्द करूँगा । पहड़ों तो यह चक्की ज़्यादा श्रेष्ठ है, जिससे अनाज पीस कर सभी लोगों का भोजन तैयार किया जाता है । यह हमें सदैव ध्यान रखना चाहिए कि कोई धर्म भेदभाव का पाठ नहीं पढ़ाता ।

इसी घटना से सम्बन्धित एक कहानी प्रस्तुत है

तीन मित्र थे । राम, असलम और गुरमीत । वे सब एक-दूसरे के घर सभी त्योहारों, उत्सव और विवाह समारोह में सपरिवार सम्मिलित होते थे । उनकी इस एकता से कुछ राजनेता खिन्न थे । वे अपने स्वार्थवश इनमें द्वेष भावना पैदा करने का प्रयास करते और तीनों को उनके धर्म और दंगो से सम्बन्धित बातें बताकर भड़काने की कोशिश करते । वे तीनों थोड़ा विचलित होने लगे । उनका मिलना-जुलना लगभग खत्म हो गया, पर वे द्वेष भावना का शिकार नहीं हुए । वे एक-दूसरे के धर्म का सम्मान करते थे क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि धर्म कभी बाँटता नहीं, बल्कि जोड़ता है । धर्म तो मानवता के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है । तभी ईद के दिन, राम और गुरमीत सपरिवार असलम के घर पहुँचते हैं और सबको ईद की मुबारकबाद देने आता है । तीनों परिवार खुशी-खुशी समय व्यतीत करते हैं तथा मिठाई व पकवानों का आनन्द लेते हैं उपर्युक्त घटना ने इस उक्ति को साक्षात् कर दिया

''मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना ।'' **[15]**

5) प्रस्तुत चित्र में दो 12-13 वर्ष की बालिकाएँ दर्शायी गई हैं । वह दोनों एक नल के पास बैठी हुई हैं । नल में बहुत तेज पानी आ रहा है जिसे देखकर वे दोनों अप्रत्याशित रूप से प्रसन्न हो रही हैं । ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे बहुत दिनों के बाद उन्हें नल में पानी की प्राप्ति हुई हो । उनकी हँसी ऐसी है जैसे बहुत समय के पश्चात् जब बादल बरसते हैं तो लोग खुशी से झूम उठते हैं ।

जल जीवन है । जल के बिना जीवन का अस्तित्व नहीं है । रहीम कवि ने जल के महत्व को दर्शाते हुए लिखा है–

''रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून ।
पानी गये न ऊबरे मोती मानुष चून'' ।।

प्राणिमात्र के जीवन का आधार जल है । जल के बिना जीवन की सम्भावना कदाचित असम्भव है । हमारे देश में इस समय जल संकट बहुत अधिक है । आपने अक्सर नलों पर प्रात:काल से ही बर्तनों की भीड़ देखी होगी । पानी के लिए लोगों को झगड़ते भी देखा होगा । हमारी सरकार प्रकृति प्रदत्त जल सबको प्राप्त कराने में सर्वथा अशक्त है । इस चित्र के माध्यम से इसी भाव की अभिव्यक्ति हो रही है ।

यह एक कस्बे का चित्र है जहाँ पर वहाँ के निवासियों ने बहुत दिनों से जल संस्थन अधिकारीयों से कस्बे में जल की व्यवस्था के लिए अनेक प्रार्थना-पत्र दिये । बड़े समूह में एकत्रित होकर बार-बार जल संकट की शिकायत की । उन्होंने यह भी बताया कि कुएँ सूख गये हैं व नल कूप व्यर्थ हो गये हैं । यहाँ के निवासी प्यास से व्याकुल हैं तथा पशुओं के लिए भी पानी की व्यवस्था नहीं है । बार-बार जाने पर शायद अधिकारियों को दया आ गई और उन्होंने उस क्षेत्र में पाइप लाइन बिछवा दी ।अब पाइप लाइन तो बिछ गई परन्तु पाइप में पानी नहीं था । पुन: सभी क्षेत्रवासियों ने प्रदेश की सरकार से अपनी कठिनाई बताई । उसमें भी एक -दो महीने लग गये । कई बार तो जल संस्थान से पानी का टैंकर भेजकर लोगों की कठिनाई को दूर किया गया, लेकिन यह स्थायी समाधान नहीं था । पुन: कुछ लोग सीधे मुख्यमन्त्री के पास पहुँचे और अपनी दीन-दशा का वर्णन किया । मन्त्री जी ने लोगों के कष्ट को समझा और तुरन्त अपने अधीनस्थ अधिकारियों को कड़े आदेश देकर तुरन्त कार्यवाही करने के लिए कहा । परिणामस्वरुप वहाँ के निवासियों की मेहनत रंग लाई और आज नलों में पानी आने लगा जिसे देखकर यह दोनों बालिकाएँ अत्यन्त प्रसन्न हैं तथा सम्पूर्ण कस्बे के निवासियों की समस्या को भी समाधान हो गया ।

यह कहानी बताती है कि सही दिशा में परिश्रम करने से सफलता अवश्य मिलती है । **[15]**

A.2

1)

दिनांक 16 - 3 - 2017
आगरा

प्रतिष्ठा में,
माननीय सूचना एवं प्रसारण मन्त्री,
भारत सरकार,
दिल्ली।
दिनांक : 14 - 2 - 2013

विषय : <u>टेलीविजन पर प्रसारित अन्धविश्वास एवं तन्त्र-मन्त्र से सम्बन्धित कार्यक्रमों पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु ।</u>

माननीय महोदय,

आज के इस वैज्ञानिक युग में टेलीविजन के चैनलों पर अनेक प्रकार के अन्धविश्वासों एवं तन्त्र-मन्त्र मिश्रित कार्यक्रमों की भरमार है । आश्चर्य की बात तो यह है कि इनके प्रभाव से कमिश्नर, कलेक्टर, वकील जैसे प्रबुद्ध लोग भी अछूते नहीं रह सके हैं । सुख व दु:ख मानव जीवन के दो अंग हैं । कभी सुख तो कभी दु:ख आते ही रहते हैं । इसी प्रकार से मानव शरीर मानसिक व शारीरिक रोगों से ग्रसित होता रहता है। उसका उपाय ओझा, ज्योतिषी या फिर झाड़-फूँक करने वाले तान्त्रिक नहीं कर सकते हैं । उसका उपचार तो चिकित्सकों व वैद्यों के पास होता है, न कि अन्धविश्वासी धन ऐंठने वाले या भ्रमित करने वाले पाखण्डी पण्डितों या तान्त्रिकों के पास है ।

महोदय, कभी गणेशजी की पत्थर की मूर्ति को दूध पिला रहे हैं । कभी भूत-प्रेत का बहाना कर एक निर्दोष पुरुष या स्त्री को कोड़ों से मार रहे हैं । दूध उफन गया तो अपशकुन हो गया । बिल्ली रास्ता काट गई तो अशुभ है । लम्बी बीमारी हो गई तो ग्रह शान्ति के लिए, यज्ञ, दान आदि करना – ये सारे कृत्य भोले-भाले लोगों को पथभ्रष्ट करके धन अर्जित करने के साधन हैं ।

टेलीविजन का कोई भी चैनल खोलकर देखिये हर चैनल पर एक नया ज्योतिषी दिखाई देगा । जिसका कार्य ऐसे कृत्य कर भोली-भाली जनता से धन ऐंठना है । सच तो यह है कि मनुष्य पुरुषार्थ करना भूल गया है । यही पर्याप्त नहीं है, कई पुरोहित तो लड़कियों के इलाज के बहाने व्यभिचार करते हैं ।

महोदय मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि जनता की ईश्वर में आस्था बनी रहने देने के लिए और लोगों की सोच सकारात्मक बनाने के लिए अतिशीघ्र इन ढोंगी व पाखण्डियों के कार्यक्रमों पर प्रतिबन्ध लगाने का कष्ट करें ताकि व्यक्ति, समाज एवं देश का उद्धार हो सके । आशा है आप मेरे इस प्रस्ताव पर गम्भीरता से विचार करेंगे ।

सधन्यवाद ।

प्रार्थी

अ ब स

कक्षा दस **[7]**

2) 15/25 कमला नगर
नई दिल्ली,
दिनांक : 15 - 2 - 2013

आदरणीय चाचाजी,

सादर चरण स्पर्श ।

कुशल पूर्वक रहकर आपकी सपरिवार कुशलता की कामना करता हूँ । कल ही मुझे निशा का पत्र मिला और ज्ञात हुआ कि आपने उसकी कक्षा दस की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् उसे आगे अध्ययन करने की अनुमति नहीं दी है । यह जानकर बहुत कष्ट हुआ । चाचाजी आप एक अध्यापक हैं । लड़कियों की शिक्षा कितनी महत्वपूर्ण है । इस विषय में आपसे अधिक कौन जान सकता है ? शिक्षा लड़कियों का वह शस्त्र है जिसके सहारे वे अपने जीवन को मजबूत आधार दे सकती है । क्या आप जानते नहीं कि समाज में कितना नारी उत्पीड़न हो रहा है ? जीवन में कभी यदि कोई विषमता आ जाये तो शिक्षित नारी अपने जीवन की समस्याओं का समाधान करने योग्य तो होती है । आज के इस विकसित परिप्रेक्ष्य में भी आप मेरी बहन को केवल चूल्हे चौकी तक ही सिमटा देना चाहते हैं । आप नहीं चाहते कि वह भी अच्छी पढ़ाई करके अपने पैरों पर खड़ी हो जाये और खुशहाल जिन्दगी जी सके ।

चाचाजी मेरी आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप निशा की आगे की पढ़ाई आरम्भ कराइये तथा वह जो सपने हृदय में सँजोये है, उन्हें पूरा करने में उसकी सहायता कीजिए ।

आशा है आप मेरे इस सुझाव का आदर करते हुए निशा की भावना को समझेंगे । चाचाजी को सादर प्रणाम । घर में सबको यथा योग्य ।

आपके उत्तर पत्र की प्रतीक्षा में,

आपका भतीजा,

अ ब स

कक्षा दस **[7]**

A.3

i) हरिहर गाँव का किसान था, जो खेती-बाड़ी का काम करता था । हरिहर पूरा दिन खेत में जी-तोड़ मेहनत करता था और शाम का समय ईश्वर की प्रार्थना में बिताता था । जीवन में उसकी एकमात्र इच्छा यह थी कि वह उडुपि के मन्दिर में भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन करना चाहता था, जो दक्षिण कर्नाटक का प्रमुख तीर्थस्थान है । **[2]**

ii) हरिहर की तीर्थ यात्रा के मार्ग में एक बूढ़ा आदमी मिला जिसकी दशा बहुत ही दयनीय थी । वह कई दिनों से भूखा-प्यासा था और पीड़ा के कारण कराह रहा था । जैसे ही हरिहर की नज़र उस बूढे.आदमी पर पड़ी उसका हृदय करुणा से भर गया । **[2]**

iii) हरिहर जानता था कि दीन-दुखियों की सेवा करना ही ईश्वर की सबसे बड़ी सेवा है, इसलिए तीर्थयात्रा के लिए एकत्र किए गए धन को लेकर हरिहर बूढ़े आदमी के घर पहुँचा, पहले उसने सभी को भरपेट भोजन कराया, फिर वह बीमार बच्चे के लिए दवा ले आया, उसने बूढ़े आदमी को खेत में बोने के लिए बीज लाकर दिए कुछ दिन बूढ़े आदमी के घर रुककर उसके बेटों की सेवा की । इस प्रकार, हरिहर ने बूढ़े व्यक्ति की सहायता की । **[2]**

iv) बूढ़े आदमी की सहायता करने में हरिहर के सारे पैसे खर्च हो गए इसलिए उसने अपनी तीर्थयात्रा को बीच में ही छोड़कर वापस घर लौटने का निश्चय किया । घर लौटने पर हरियर ने अपने स्वप्न में भगवान श्रीकृष्ण को देखा, जो उससे कह रहे थे कि तुम ही मेरे सच्चे भक्त हो तुमने बूढ़े आदमी की सहायता करके अपनी इच्छा का बलिदान दिया । वह बूढ़ा आदमी मैं ही था अर्थात् मैं वेश बदलकर तुम्हारी परीक्षा ले रहा था । **[2]**

v) प्रस्तुत गद्यांश से हमें कठिन परिस्थितियों में दूसरों की सहायता करने की शिक्षा मिलती है । जिस प्रकार हरिहर ने अपनी इच्छा का बलिदान करके कठिन परिस्थितियों में अपना जीवन व्यतीत कर रहे बूढ़े आदमी की सहायता की ठीक उसी प्रकार हम सभी को यह शिक्षा ग्रहण करना चाहिए कि हमें भी सर्वदा दूसरों की सहायता करने के लिए तत्पर रहना चाहिए । **[2]**

A.4

i) (a) लोभ - लोभी **[½]**
(b) इतिहास - ऐतिहासिक **[½]**

ii) (a) बादल - मेघ, वारिद **[1]**
(b) स्वतंत्र - स्वच्छन्द, स्वेच्छाचारी **[1]**

iii) (a) उपकार × अपकार **[½]**
(b) कोमल × कठोर **[½]**
(c) नूतन × पुरातन **[½]**
(d) स्वामी × सेवक **[½]**

iv) (a) **अपने पैर पर आप कुल्हाड़ी मारना** - अपने पिता से अकारण दुश्मनी करके पुत्र अपने पैर पर आप कुल्हाड़ी मारता है । **[1]**
(b) **बाल बाल बचना** - ट्रक और कार की टक्कर में पास में ही खड़ा बालक बाल-बाल बच गया। **[1]**

v) (a) अधिक – अधिकता **[½]**
(b) भक्त – भक्ति **[½]**

vi) (a) महाराणा प्रताप का साहस अतुलनीय था । **[1]**
(b) मेरे घर में काम करने वाला नौकर भाग गया है । **[1]**
(c) रानी की सेविका बहुत बुद्धिमती थी । **[1]**

❖❖❖❖